(E - 116) श्रीमुनि राजत समतासंग

(मेरी भावना–राग)

श्रीमुनि राजत समतासंग, कायोत्सर्ग समाहित अंग; श्रीमुनि०

करतैं नहि कुछ कारज तातैं, आलंबित भुज कीन अभंग;
गमनकाज कछु हू नहि तातैं, गति तजि छाके निजरसरंग। श्रीमुनि० १

लोचनतैं लखिबो कछु नाहीं, तातैं नाशादृग अचलंग;
सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्राप्त इकंत सुचंग। श्रीमुनि० २

तह मध्याह्नमांहि निज ऊपर, आयो उग्रप्रताप पतंग;
कैधों ज्ञानपवनबलप्रजुलित, ध्यानानलसों उछलि फुलिंग। श्रीमुनि० ३

चित्त निराकुल अतुल उठत जंह, परमानंद-पियूष-तरंग;
'भागचंद' अैसे श्रीगुरुपद, वंदत मिलत स्वपद उत्तंग। श्रीमुनि० ४